ऐम्ब्रोसिया

नेचुरल प्रोडक्ट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड

प्राकृतिक मधु के उत्पादक एवं निर्यातक

आजीवन सदस्य- नेशनल बी बोर्ड, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार

एक परिचय

- ऐम्ब्रोसिया नेचुरल प्रोडक्ट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना सन 2007 में हुई.
- कंपनी वर्तमान में नेशनल बी बोर्ड, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की आजीवन सदस्य हैं.
- वर्तमान में कंपनी के स्वयं के 5000 मौन गृह एवं कंपनी से जुड़े हुए समूह के पास लगभग 75000 मौन गृह हैं.
- कंपनी प्रति वर्ष 2000 मेट्रिक टन शहद भारत से निर्यात कर रही हैं.

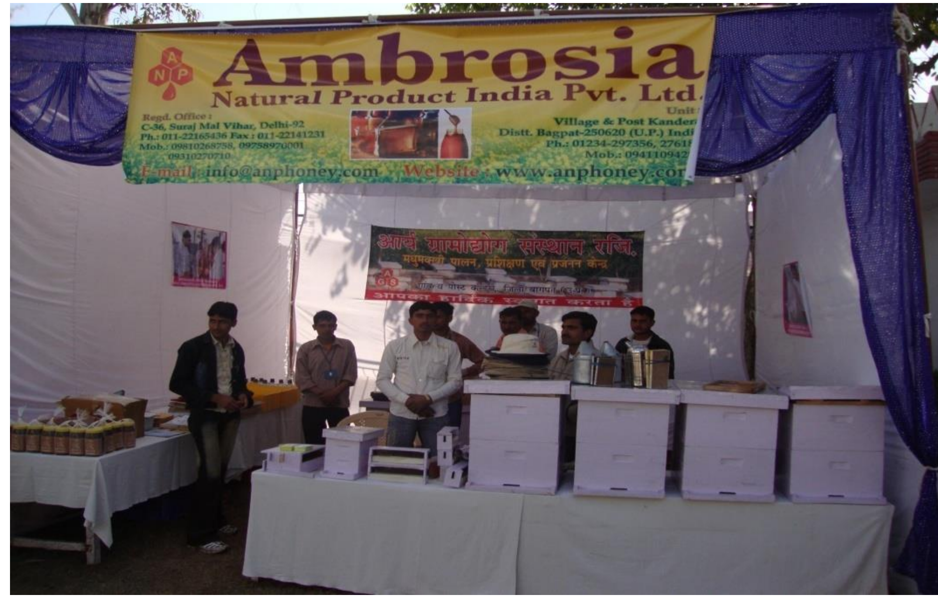

मधुमक्खीपालन-परिचय व महत्व

- ✓मधुमक्खीपालन- मधुमक्खी को पालने का विज्ञान
- ✓मधुमक्खी की आदत, व्यवहार, रुचि एवं कार्यशैली को पहचान कर उसकी उचित आवश्यकताओं की पूर्ति करना और अधिकतम लाभ अर्जित करना
- ✓भारतीय कृषि आधारित उद्धम के लिए अति उपयुक्त
- ✓ग्रामीण समुदायों एवं पर्यावरण में विशेष भुमिका
- ✓परागण कर्ता के रूप में फसलो की उत्पादक्ता, वानिकी व जैव विविधता बनाए रखने मे सहायक

मधुमक्खीपालन और किसान

- ✓ कम संसाधनो से शुरुआत सम्भव
- ✓ भूमिहीन किसानो तथा महिलाओ के द्वारा अपनाने योग्य व्यवसाय
- ✓ कृषि व् पशुपालन के साथ-साथ घर के आसपास करने योग्य व्यवसाय
- ✓ निवेश की गई पूंजी एक ही साल में लाभ के रूप अर्जित करना एवं व्यवसाय का चार गुना होना
- ✓ मधुमक्खीपालन द्वारा उत्पादित उत्पादो की देश व् विदेशों में अत्यधिक मांग
- ✓ मधुमक्खियों द्वारा पर-परागण से किसानों की सभी तिलहन, दलहन व् फलों की उत्पादकता में 20% से 100% तक वृद्धि होती हैं

व्यवसायिक मधुमक्खी पालन

- व्यवसायिक मधुमक्खीपालन को वैज्ञानिक तरीके से करने के लिए उचित प्रशिक्षण लेना अति आवश्यक हैं.
- व्यवसायिक मधुमक्खीपालन को वैज्ञानिक तरीके से कम से कम 50 मौन वंशों से प्रारम्भ करना चाहिए.
- व्यवसायिक मधुमक्खी पालन द्वारा किसान की आमदनी को दोगुना करना एवं बेरोजगारी को दूर करना
- वैज्ञानिक तरीके से मधुमक्खीपालन द्वारा उत्पादित उत्पादों जैसे शहद, मोम, पराग, प्रोपोलिस, रॉयल जेली एवं बी वेनम का गुणवता पूर्वक उत्पादन करके अधिक से अधिक आय अर्जित करना

आवश्यकताएँ

- मधुक्खीपालन के विषय में वैज्ञानिक ज्ञान होना
- मधुक्खीपालन में पैदा होने वाली हर परिस्थिति से निपटने का वैज्ञानिक ज्ञान होना
- अधिक एवं गुणवता वाले उत्पाद प्राप्त करने के लिए नवीनतम तकनीकी ज्ञान होना
- मधुमक्खीपालन का मौसमीय प्रबंधन का उचित ज्ञान होना
- मधुमक्खीपालन से सम्बंधित फसलों/पुष्पों का अपने क्षेत्र व् प्रदेश में फसल-चक्र का ज्ञान होना
- उच्च गुणवता वाले यंत्रों का वैज्ञानिक तरीके से प्रयोग करना
- शहद के अलावा प्राप्त होने वाले अन्य उत्पादों के बारें मे तकनिकी ज्ञान
- प्रतिबंधित एवं हानिकारक रोग प्रतिरोधी दवाओं के इस्तेमाल से बचना।
- जैविक शहद उत्पादन के लिए तय किए गए राष्ट्रीय मानकों की विस्तृत जानकारी।
- मधुमक्खी के स्वास्थ्य उपचार के लिए प्रयोग की जाने वाली दवाइयों का उचित ज्ञान होना

मधुमक्खियों की किस्में

ऐपिस डोरसेटा

ऐपिस मेलिफेरा

ऐपिस सिराना

ऐपिस फ्लोरिया

एपिस मेलिफेरा (इटालियन मधुमक्खी)

- आकार में एपीस सिराना मधुमक्खी से बड़ी होती हैं.
- एक मौनवंश में 60000 से 70000 मधुमक्खियाँ
- रानी, कमेरी व नर अलग-अलग कोष्ठों में
- अधिक शहद उत्पादन क्षमता के कारण भारत में पालने के प्रयास
- सन 1962 में नगरोटा, हिमाचल प्रदेश से इसकी शुरुआत
- मैदानी क्षेत्रों के लिए काफी उपयुक्त
- सामान्यत 50 से 60 किलोग्राम शहद उत्पादन किन्तु 150 किलोग्राम तक की क्षमता

मेलिफेरा का मौनवंश

एक रानी

एपेअरी

सेकड़ों नर

हजारों मादा

एपिस मेलिफेरा का जीवन चक्र

- जीवन चक्र चार अवस्थाओं में पूर्ण
  - -अंडा
  - -शिशु
  - -प्युपा
  - -व्यस्क
- रानी मधुमक्खी का कार्य अंडे देना
- अंडे- निषेचित एवं अनिषेचित
- निषेचित अंडे- रानी एवं कमेरी मधुमक्खी
- अनिषेचित अंडे- नर मधुमक्खी
- तीन दिन तक सभी का भोजन रॉयल जैली
- उसके बाद उम्र एवं लिंग के अनुसार भोजन अलग-अलग

	अंडा	शिशु	प्युपा	व्यस्क
रानी	3	5	8	16
कमेरी	3	5	12-13	20-21
नर	3	7	14	24

अंडा

शिशु

प्युपा

व्यस्क

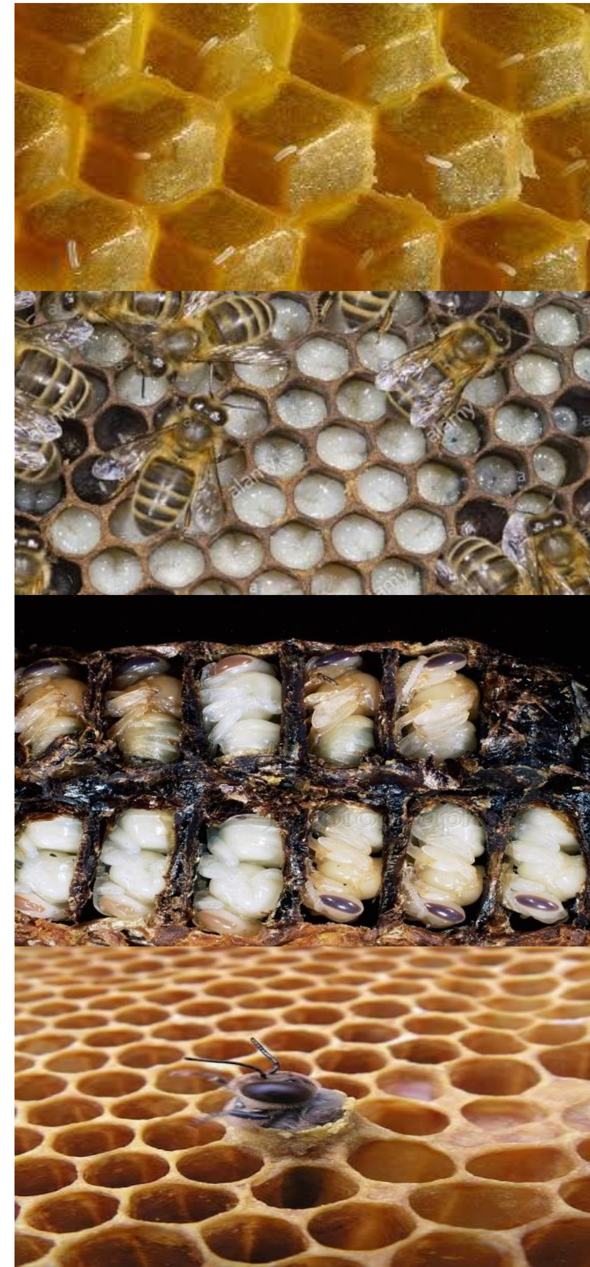

रानी मधुमक्खी

- आकार में सबसे बड़ी एवं लम्बी
- जीवन काल- लगभग 3 वर्ष
- जीवन काल में एक बार सम्भोग
- मुख्य कार्य- अंडे देकर वंश वृद्धि करना
- एक दिन में औसतन 1600 अंडे
- अच्छी रानी- शांत, चमकीली एवं फुर्तीली
- अंडे से रानी के बनने का समय- 16 दिन

नर मधुमक्खी

- निखट्टू के नाम से भी जाना जाता हैं.
- आकार में रानी से छोटा किन्तु कर्मठ से बड़ा होता हैं.
- एक मौनवंश में औसतन 100 से 500 की संख्या
- डंक विहीन होता हैं.
- मुख्य कार्य- रानी के साथ सम्भोग
- सम्भोग के तुरन्त बाद मृत्यु
- मकरंद एवं पराग की कमी के समय मादा द्वारा बहिष्कार
- जीवनकाल लगभग 50 से 90 दिन
- अंडे से नर के बनने का समय- 24 दिन

कर्मठ मधुमक्खी

- इसके मुख्य कार्यो में फूलों से शहद इक्कट्ठा करना, पराग इक्कट्ठा करना, छत्ते का निर्माण करना, मौन गृह की सुरक्षा करना, फूलों में परागण करना आदि हैं.

- आकार में सबसे छोटी किन्तु संख्या में सबसे अधिक होती हैं.

- एक मौन वंश में लगभग 25 हजार से 40 हजार की संख्या होती हैं.
- औसत जीवनकाल लगभग 70 से 90 दिन का होता हैं.
- जीवन भर बिना विश्राम के अनवरत कार्य करती हैं.
- अंडे से कर्मठ के बनने का समय- 21 दिन

संरक्षण के उपाय

- मौन पुष्पों के क्षेत्र में विस्तार करना चाहिए.
- बंजर भूमि में मौन पुष्पों का रोपण करना चाहिए.
- वनों की कटाई व आग पर रोक लगनी चाहिए.
- जैविक खेती अपनाना चाहिए.
- जंगली मधुमक्खी से शहद उत्पादन को वैज्ञानिक तरीके से करना चाहिए.
- संरक्षण के लिए विभिन्न नीतियों को लागू करना चाहिए.
- पर्यावरण के संरक्षण व जैव विविधता में मधुमक्खियों की भूमिका के बारें में जागरूक करना चाहिए.

एपिस मेलिफेरा- लैंगस्ट्रोथ मौनगृह

- एपिस मेलिफेरा मौनगृह का आविष्कार सन 1851 में अमेरिका के लैंगस्ट्रोथ नामक वैज्ञानिक ने किया था.
- एपिस मेलिफेरा- लैंगस्ट्रोथ मौनगृह
- में दो प्रकार के कक्ष शिशुकक्ष व मधुकक्ष होते हैं.
- मधुकक्ष का उपयोग केवल मधुप्रवाह के समय करना चाहिए
- शिशु कक्ष का प्रयोग मौन वंश की वृधि हेतु करना चाहिए.
- शिशुकक्ष के तलपट में एक प्रवेश द्वार होता हैं.
- अधिकतम 10 चौखटें
- चौखटों के बीच में एक निर्धारित मौनान्तर होता हैं.
- मौनगृह के मुख्य भाग

    -स्टैंड

    -तलपट

    -प्रवेश द्वार

    -शिशुकक्ष

    -मधुकक्ष

    -चौखटें

    -ढक्कन

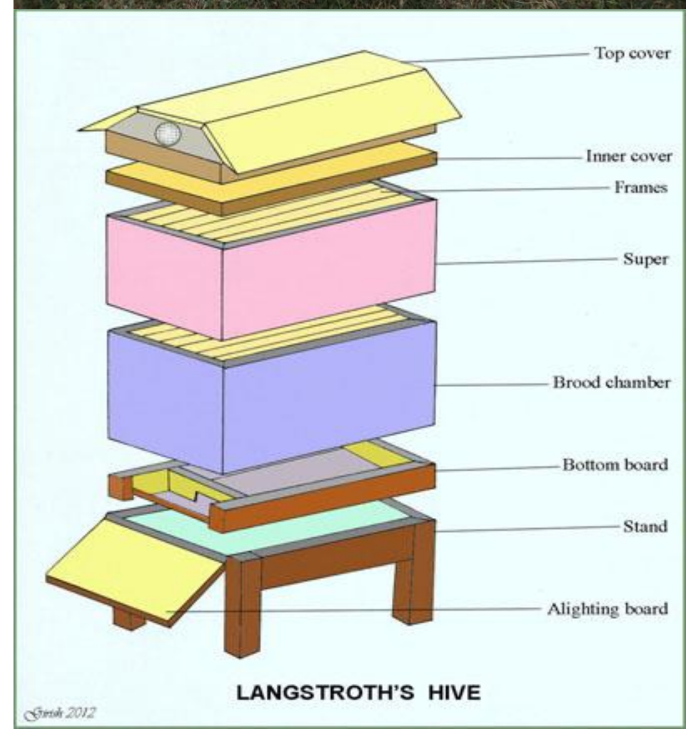

अन्य उपकरण

स्टैंड

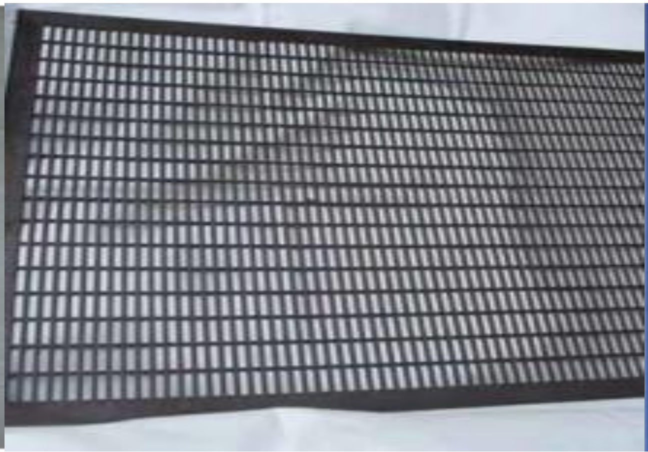
रानी अवरोधक

रानी रौक यंत्र

पराग पाश

मौमी आधार शीट

धुआं कर

अन्य उपकरण

मुख रक्षक जाली

दस्ताने

हाईव टूल

ब्रश

शहद निष्कासन यंत्र

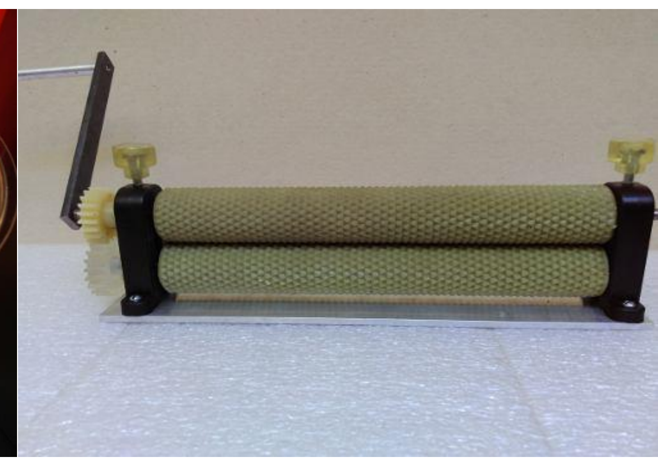

आधार शीट यंत्र

मधुमक्खी के उत्पाद

- शहद
- मौम
- पराग
- प्रोपोलिस
- रॉयल जेली
- मौन विष

स्थानांतरित मधुमक्खीपालन

- ऋतु अनुसार एक जगह से दूसरी जगह ले जाना
- अधिकतम समय तक मधुस्राव
- मधुमक्खी की संख्या में वृद्धि
- प्राप्त होने वाले मधु एवं पराग में विविधता
- स्थायी की तुलना में चार गुना ज्यादा आय संभव
- सर्दियों से नुकसान से बचाव
- पराग एवं मकरंद के विकल्प के खर्च से बचाव
- बीमारियों एवं शत्रुओं से बचाव का जरिया
- फसलों के परागण से उत्पादन में बढ़ोतरी संभव

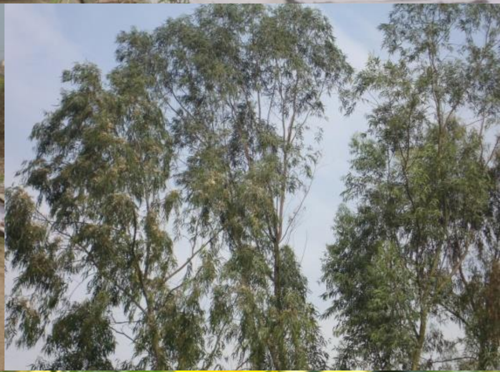

उत्तम मौन पुष्प

फसल	फूलने का समय	स्रोत
अजवायन	सितम्बर-अक्टूबर	मकरंद, पराग
जामुन	अप्रैल-मई	मकरंद, पराग
महुआ	फरवरी-मार्च	मकरंद
अखरोट	फरवरी-अप्रैल	मकरंद, पराग
संतरा/नींबू प्रजाति	फरवरी-मार्च	मकरंद, पराग
लीची	फरवरी-मार्च	मकरंद, पराग
सरसों	फरवरी-मार्च	मकरंद, पराग
धनिया	जनवरी-मार्च	मकरंद, पराग
कद्दू	जून-अगस्त	पराग

जामुन

महुआ

अखरोट

नींबू

लीची

सरसों

धनिया

कद्दू

अजवायन

उत्तम मौन पुष्प

फसल	फूलने का समय	स्रोत
मक्का	फरवरी-जून (मैदानी) मई-जून (पहाड़ी)	पराग
बकव्हीट (ओगला)	अगस्त-सितम्बर	मकरंद, पराग
ज्वार	मई-जुलाई	पराग
चिक पी	फरवरी-मार्च	मकरंद, पराग
अरहर	सितम्बर-दिसम्बर	मकरंद, पराग
रबर	मार्च	मकरंद
सूरजमुखी	मार्च-जून	मकरंद, पराग
तिल	अगस्त-सितम्बर	मकरंद, पराग
मेथी	मार्च-अप्रैल	मकरंद, पराग

मक्का

ओगला

ज्वार

चिक पी

अरहर

रबर

मैथी

सूरजमुखी

तिल

उत्तम मौन पुष्प

फसल	फूलने का समय	स्रोत
जंगली चेरी	अप्रैल-मई	मकरंद, पराग
आक्खे	फरवरी-मार्च	मकरंद
सफेदा	फरवरी-मई	मकरंद, पराग
बोटल ब्रुश	मार्च-अक्टूबर	मकरंद, पराग
सालविया (तुलसा)	वर्ष भर	मकरंद
पराइड ऑफ इंडिया (जरुल)	जून-जुलाई	मकरंद, पराग
कॉसमॉस	सितम्बर-अक्टूबर	मकरंद, पराग

चेरी

आक्खे

सफेदा

बोटल ब्रुश

सालविया

जरुल

कॉसमॉस

उत्तम मौन पुष्प

फसल	फूलने का समय	स्रोत
शीशम	मार्च-अप्रैल	मकरंद
बेर	मई-जुलाई	मकरंद, पराग
कशमल	मार्च-अप्रैल	मकरंद, पराग
खैर	जून-जुलाई	मकरंद
रीठा	अप्रैल-मई	मकरंद, पराग
छिछ्डी	अगस्त-अक्टूबर	मकरंद, पराग
दूब	अगस्त-सितम्बर	पराग
बरसीम	अप्रैल-जून	मकरंद
अल्फ़ा अल्फ़ा	मार्च-मई	मकरंद, पराग

शीशम

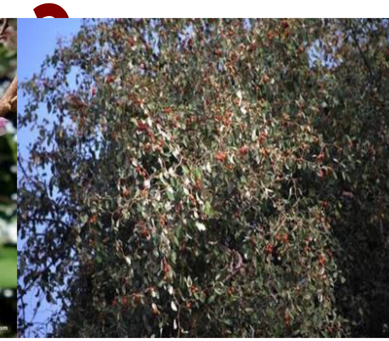
बेर

कशमल

खैर

रीठा

छिछ्डी

दूब

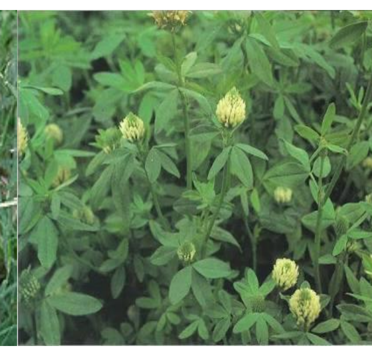
बरसीम

अल्फ़ा-अल्फ़ा

मधुमक्खी-एक सफल परगणकर्ता

- संसार मे मधुमक्खियों की लगभग 20,000 किस्में
- इनमें से अधिकतर हिंदुकुश हिमालय क्षेत्र में
- सभी प्रकार की मधुमक्खियाँ फूलों पर निर्भर
- अपने भोजन के लिए बहुत से फूलों पर भ्रमण
- सभी मधुमक्खियों का आपस में एक अटूट संबंध
- एक प्रकार की सामाजिक कीट
- शारीरिक बनावट परागण के अनुकूल
- एक ही प्रकार के फूलों पर कार्य करने की आदत

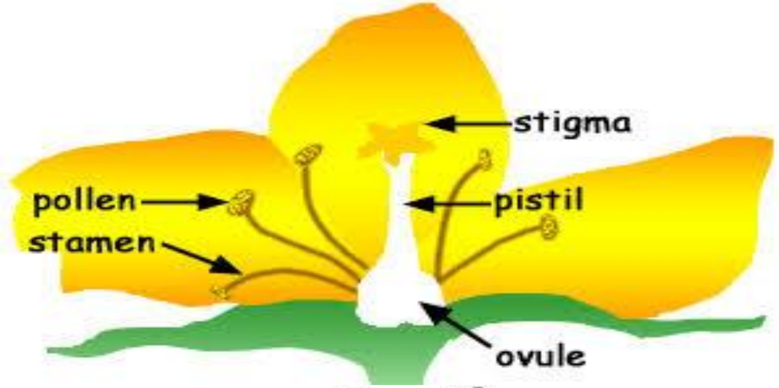

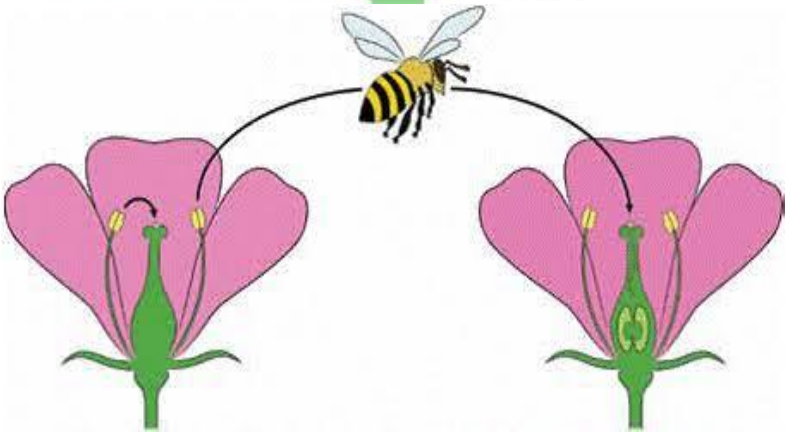

शहद निष्कासन

- धुआ कर से मौन गृह पर धुआ करें
- ब्रश से फ्रेम को मधुमक्खी रहित करें
- चाकू से मौम की सील काटे
- फ्रेम को निष्कासन यंत्र में डाले.
- निर्धारित गति से यंत्र को घुमाए
- सभी फ्रेम को पुनः मौन गृह में डालें
- यंत्र का ढक्कन खोलकर शहद को बाल्टी में भरकर सुरक्षित भण्डारण करें

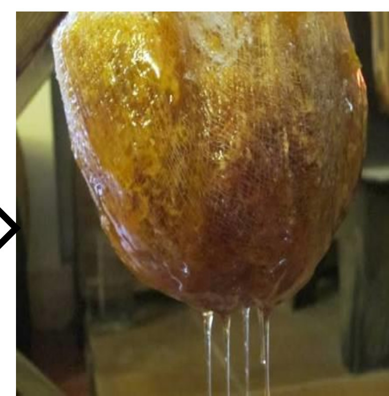

शहद प्रसंस्करण प्रक्रिया

- मधुमक्खी पालक से कच्चा शहद प्राप्त करना
- सर्वप्रथम शहद के नमूने लेकर उसकी गुणवता की जाँच
- जाँच में स्वीकृत शहद को Honey Melting Chambers में lot processing करना

कच्चा शहद

नमूने लेना

MELTING CHAMBER

शहद प्रसंस्करण प्रक्रिया

- तत्पश्चात फिल्टर्स के द्वारा शहद में से अशुद्धियों को निकालना
- नमी को नियंत्रित करने के लिए शहद को Moisture Reduction Room से होकर गुजरना
- Blending के लिए शहद को Homogenized करने हेतु लगभग ८ घंटे तक agitator लगे हुए Homogenization tank में रखना.

FILTERATION

MOITURE REDUCTION

HOMOGENISATION

शहद प्रसंस्करण प्रक्रिया

- शुद्ध शहद से 250 ग्राम, 500 ग्राम, 1 कि.ग्रा. या 300 कि.ग्रा.के ड्रम भरना
- अंतिम टेस्टिंग के लिए नमूने लेकर प्रयोगशाला में भेजना
- शहद की पैकिंग को खरीददार तक

PACKING

FINAL TESTING

FINAL BOTTELING

TO COSTOMER

मधुमक्खीपालकों के लिए सुझाव

- एण्टीबायोटिक्स/कीटनाशक/रासायनिक पदार्थों का उपयोग बिलकुल न करें।
- अपने शहद एवं अन्य उत्पादों की गुणवता बरकरार रखने के प्रयास जारी रखें।
- बीमारियों की रोकथाम के लिए जैविक एवं वातावरण अनुकूलित तकनीकियाँ उपलब्ध है जिनका प्रयोग अपने नजदीकी कृषि विश्वविद्यालयों/अनुसंधान संस्थाओं से सलाह लेकर करें।
- शहद के लिए फूड ग्रेड बर्तनों का ही इस्तेमाल करें।
- सभी मधुमक्खीपालक अनिवार्य रूप से अपना पंजीकरण नेशनल बी बोर्ड में करवाएँ।
- पंजीकरण हेतु www.nbb.gov.in पर देखें।
- वैज्ञानिक प्रशिक्षण हेतु www.agshoney.com पर सम्पर्क करें.

धन्यवाद्

सम्पर्क सूत्र

+919810268758

+911122144474

office@anphoney.com

www.anphoney.com